

**SUBJECT : SANSKRIT**

**CHAPTER NO: 2**

**CHAPTER NAME: BILASYABANI KADAPI ME**

**NA SRUTA**

**PPT-3**

---

**CHANGING YOUR TOMORROW**

---

द्वितीयः पाठः



बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता



## Expected Learning Outcome

- १ . छात्राणाम् मनसी उपस्थित बुद्धेः विकाश
- २ . वौद्धिकज्ञानस्य वृद्धिः



## पूर्वपाठस्य आलोचना -

- १ . सिंहस्य नाम किम् ?
- २ . गृहायाः स्वामी कः आसीत् ?
- ३ . कः आहारं न प्राप्तवान् ?
- ४ . सिंहः किम् अचिन्तयत् ?
- ५ . कः निगुढो भुत्वा तिष्ठति ?



तदहम् अस्य आह्वानं करोमि । एवं सः बिले प्रविश्य मे भोज्यं  
भविष्यति । इत्थं विचार्य सिंहः सहसा शृगालस्य  
आह्वानमकरोत् । सिंहस्य उच्चगर्जन- प्रतिध्वनिना सा गुहा  
उच्चैः शृगालम् आह्वयत् अनेन अन्ये पि पशवः भयभीताः  
अभवन् । शृगालो पि ततः दुरं पलायमानः इममपठत्-

**सरलार्थ:** तो (तब) मैं इसको पुकारता हूँ। इस तरह वह बिल में प्रवेश करके मेरा भोजन (शिकार) बन जाएगा। इस प्रकार सोचकर शेर ने अचानक गीदड़ को पुकारा। शेर की गर्जना की गूँज (प्रतिध्वनि) से वह गुफा शेर से गीदड़ को पुकारने लगी। इससे दूसरे पशु भी डर से व्याकुल हो गए। गीदड़ भी वहाँ से दूर भागते हुए इस (श्लोक) को पढ़ने लगा-



<b>शब्दार्थः</b>	<b>भावार्थः</b>
तत्	तब (तो)।
आह्वानम्	पुकार (बुलावा)।
प्रविश्य	प्रवेश करके।
मे	मेरा।
भोज्यम्	भोजन योग्य (पदार्थ)।
इत्थं	इस तरह।
विचार्य	विचार करके।
सहसा	एकाएक।
उच्चगर्जन	शोर की गर्जना की।
प्रतिध्वनिना	गूँज (किसी वस्तु से टकराकर वापस आई आवाज)।
उच्चैः	शोर से।
आह्वयत्	पुकारा।
भयभीताः	भय से व्याकुल।
ततः	वहाँ से।
पलायमानः	भागता हुआ।
इमम्	इस (को)।

अनागतं यः कुरुते स शोभते स शोच्यते यो न करोत्यनागतम् ।  
वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा बिलस्य वाणी न कदापि मे  
श्रुता ॥

**अन्वयः**यः अनागतं कुरुते स शोभते, यः अनागतम् न करोति स  
शोच्यते। अत्र वने संस्थस्य (मे) जरा समागता (परं) मे कदापि  
बिलस्य वाणी न श्रुता॥

**सरलार्थ:** जो आने वाले कल का (आगे आने वाली संभावित आपदा का) उपाय करता है, वह संसार में शोभा पाता है और जो आने वाले कल का उपाय नहीं करता है (आनेवाली संभावित विपत्ति के निराकरण का उपाय नहीं करता) वह दुखी होता है। यहाँ वन में रहते मेरा बुढ़ापा आ गया (परन्तु) मेरे द्वारा (मैंने) कभी भी बिल की वाणी नहीं सुनी गई।

शब्दार्थः	भावार्थः
अनागतम्	आने वाले कल का।
यः	जो।
कुरुते	(निराकरण) करता है।
शोभते	शोभा पाता है।
शोच्यते	चिन्तनीय होता है।
वनेऽत्र	यहाँ वन में।
संस्थस्य	रहते हुए का।
जरा	बुढ़ापा।
बिलस्य	बिल का (गुफा का)।
वाणी	आवाश।
कदापि	कभी भी।
मे	मेरे द्वारा।
श्रुता	सुनी गई।

## EXTRA QUESTIONS

- १ . सिंह किम् अचिन्तयत् ?
- २ . कथम वाणी न प्रवर्तन्त ?
- ३ . सिंहः किदृशम् शृगालस्य आह्वानं अकरोत् ?
- ४ . गृहा केन प्रतिध्वनिना ?
- ५ . कः शोभते ?
- ६ . शृगालः कुत्र पलायितः ?
- ७ . शृगालः किम् अचिन्तयत् ?
- ८ . शृगालः दुरं पलायमानः कः श्लोकः अपठत

गृहकार्य -

अनुच्छेदात् पञ्च सन्धि, पञ्च समासं च लिखत ।



# ODM EDUCATIONAL GROUP